bharatkhand

न्यूज़लेटर

भरतखंड किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड कंसोर्टियम

जून 2026

Supported by Solidaridad

संपादकीय संदेश

प्रिय पाठकों,

जून 2026 के भरतखंड न्यूज़लेटर में आपका स्वागत है।

यह संस्करण हमारे लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि और नई ऊर्जा का प्रतीक है।
भरतखंड को भारत सरकार के राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन–तिलहन कार्यक्रम के अंतर्गत मध्य प्रदेश के छह जिलों में स्थित 11 क्लस्टरों के लिए वैल्यू चेन पार्टनर के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। साथ ही, राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अंतर्गत 12 जिलों में कार्यान्वयन सहयोगी के रूप में भी सूचीबद्ध किया गया है। यह उपलब्धियाँ इस बात की पुष्टि करती हैं कि हमारे किसान वर्षों से जिस टिकाऊ एवं कम लागत वाली कृषि पद्धति को अपनाते आ रहे हैं, वह केवल एक विचार नहीं बल्कि उनकी आजीविका का आधार है। हमारा लक्ष्य सदैव यही रहा है कि किसानों को केवल योजनाओं तक ही नहीं, बल्कि ज्ञान, बाज़ार और मजबूत संस्थागत सहयोग तक भी पहुँच मिले।
इस अंक में हम भरतखंड फूड्स को भी प्रमुखता से प्रस्तुत कर रहे हैं हमारा 'फार्म-टू-किचन' मंच, जो पाषाण-चक्की से पिसे मसाले, पारंपरिक तरीके से तैयार दालें और न्यूट्रीब्लेंड मल्टीग्रेन आटा उपभोक्ताओं तक पहुँचाता है। ये सभी उत्पाद इस बात का प्रमाण हैं कि भोजन की गुणवत्ता केवल उसके पोषक तत्वों पर नहीं, बल्कि उसके उत्पादन की प्रक्रिया पर भी निर्भर करती है।
हमें अगर-मालवा जिले के कचनारिया एफपीओ की श्रीमती रेखा चौहान की प्रेरणादायक कहानी साझा करते हुए गर्व हो रहा है। एक व्यक्तिगत किसान से लगभग तीस महिला किसानों के समूह का नेतृत्व करने तक की उनकी यात्रा इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि हमारा प्रयास वास्तव में परिवर्तन के लिए समर्पित है।
अंत में, हम अपने वर्ष 2025 के इंटर्नशिप कार्यक्रमों का परिचय भी दे रहे हैं, जो स्कूली विद्यार्थियों और कृषि स्नातक छात्रों के लिए तैयार किए गए हैं। हमारा विश्वास है कि भारतीय कृषि का भविष्य उन्हीं हाथों में सुरक्षित है जो इसे जमीनी स्तर पर समझते हैं।
हर मौसम के साथ यह अभियान और मजबूत हो रहा है। मिट्टी अपनी कहानी कह रही है, और भरतखंड उस आवाज़ को सुनने और आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।
शुभकामनाएँ!

डॉ. सुरेश मोटवानी
महाप्रबंधक, सॉलिडरीडाड

एनएमईओ-तिलहन के तहत भरतखंड को वैल्यू चेन पार्टनर की मान्यता

भारत सरकार की प्रमुख योजना राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन – तिलहन (NMEO–Oilseeds) के अंतर्गत भरतखंड कंसोर्टियम का चयन वैल्यू चेन पार्टनर के रूप में किया गया है। यह उपलब्धि भारत में टिकाऊ, समावेशी एवं बाज़ारोन्मुख तिलहन मूल्य श्रंखला को सुदृढ़ बनाने की दिशा में भारटकंड की यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।

यह मान्यता किसानों की आय बढ़ाने, तिलहन उत्पादन को प्रोत्साहित करने तथा उत्पादन से लेकर बाज़ार तक एक सशक्त और प्रभावी मूल्य श्रंखला विकसित करने के लिए भरतखंड के निरंतर प्रयासों को दर्शाती है। इसके माध्यम से संगठन किसानों को बेहतर तकनीकी मार्गदर्शन, क्षमता विकास, बाज़ार संपर्क तथा संस्थागत सहयोग उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

वैल्यू चेन पार्टनर के रूप में भरतखंड किसानों को उन्नत कृषि पद्धतियों को अपनाने, गुणवत्तापूर्ण बीजों तक पहुँच सुनिश्चित करने, जलवायु-अनुकूल उत्पादन प्रणालियों के क्रियान्वयन तथा प्रमुख तिलहन फसलों विशेष रूप से सोयाबीन, मूंगफली और तिल के लिए मजबूत बाज़ार संपर्क स्थापित करने में सहयोग प्रदान करेगा।

यह पहल मध्य प्रदेश के छह जिलों भोपाल, सीहोर, देवास, शाजापुर, धार और बड़वानी के 11 क्लस्टरों में लागू की जाएगी। खेत स्तरीय प्रदर्शनों, किसान प्रशिक्षणों, तकनीकी परामर्श सेवाओं तथा निरंतर मार्गदर्शन एवं सहयोग के माध्यम से भरतखंड का उद्देश्य तिलहन फसलों की उत्पादकता बढ़ाना, उत्पादन संबंधी जोखिमों को कम करना और किसानों की आय में वृद्धि करना है। साथ ही, यह पहल टिकाऊ एवं पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देकर एक सशक्त और स्थायी तिलहन मूल्य श्रंखला के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

- भारत सरकार की प्रमुख योजना राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन – तिलहन के अंतर्गत आधिकारिक वैल्यू चेन पार्टनर के रूप में मान्यता।
- मध्य प्रदेश के हजारों तिलहन उत्पादक किसानों के साथ प्रत्यक्ष जुड़ाव और सहयोग का अवसर।
- जलवायु-स्मार्ट एवं पुनर्योजी कृषि पद्धतियों को बढ़ावा।
- किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) के माध्यम से कृषि आदानों, तकनीकी परामर्श, सामूहिक विपणन तथा बाज़ार संपर्कों को सशक्त बनाना।
- देश में खाद्य तेलों के घरेलू उत्पादन को बढ़ाने और आयात निर्भरता को कम करने के राष्ट्रीय लक्ष्य में योगदान।

यह साझेदारी किसानों, एफपीओ, सरकारी संस्थाओं और निजी क्षेत्र के हितधारकों के बीच एक मजबूत सेतु के रूप में भरतखंड की भूमिका को और अधिक सुदृढ़ करती है। एक विश्वसनीय पारिस्थितिकी तंत्र सहयोगी के रूप में भरतखंड समावेशी, सुदृढ़ और टिकाऊ तिलहन मूल्य श्रंखलाओं के निर्माण हेतु विभिन्न भागीदारों को एक मंच पर लाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह पहल किसानों की समृद्धि, कृषि क्षेत्र की स्थिरता और भारत की खाद्य तेल आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

मिट्टी की हर आवाज़ को सुनता है भरतखंड

मध्य प्रदेश सरकार के किसान कल्याण और कृषि विकास संचालनालय ने 'भरतखंड कंसोर्टियम ऑफ़ FPOs' को 'नेशनल नेचुरल फार्मिंग मिशन' (NNFM) के तहत एक 'इम्प्लीमेंटिंग पार्टनर' (कार्यान्वयन भागीदार) के तौर पर आधिकारिक रूप से शामिल किया है। यह मिशन भारतीय कृषि को उसकी पारिस्थितिक जड़ों की ओर वापस ले जाने के लिए शुरू की गई एक प्रमुख पहल है।

बारह जिले, एक साझा लक्ष्य।

उज्जैन के मैदानी इलाकों से लेकर झाबुआ और बड़वानी के आदिवासी इलाकों तक, भरतखंड की भागीदारी मध्य प्रदेश के 12 जिलों भोपाल, सीहोर, देवास, उज्जैन, शाजापुर, रतलाम, नीमच, मंदसौर, धार, झाबुआ, बड़वानी और आगर-मालवा तक फैलेगी।

यह केवल पर्चों और निर्देशों के माध्यम से संचालित किया जाने वाला कार्यक्रम नहीं है। यह एक जमीनी आंदोलन है, जो किसान प्रशिक्षणों, खेत स्तरीय प्रदर्शनों और निरंतर मार्गदर्शन एवं सहयोग की उस प्रक्रिया पर आधारित है, जो जिज्ञासा को विश्वास में और विश्वास को व्यवहार में बदल देती है।

इसका उद्देश्य स्पष्ट है ऐसी मिट्टी का निर्माण जो फिर से जीवंत हो सके; ऐसे खेत जो कम लागत में अधिक टिकाऊ आजीविका प्रदान करें; और ऐसे किसान जो अपनी अगली फसल के लिए उर्वरकों पर निर्भर होकर अपने भविष्य को गिरवी रखने के लिए मजबूर न हों।

प्राकृतिक खेती के माध्यम से यह पहल कृषि को अधिक आत्मनिर्भर, लाभकारी और पर्यावरण-अनुकूल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जहाँ किसान केवल उत्पादन नहीं करते, बल्कि अपनी भूमि, संसाधनों और भविष्य को भी सशक्त बनाते हैं।

कम लागत की फसल का छिपा हुआ मूल्य

दशकों तक भारतीय किसानों को अधिक उत्पादन के वादे के साथ रासायनिक आदानों पर आधारित उच्च-लागत कृषि को बढ़ावा दिया गया, लेकिन इसके परिणामस्वरूप मिट्टी की उर्वरता में गिरावट, बढ़ता कर्ज और किसानों के लाभ में लगातार कमी देखने को मिली। अब इस मॉडल की वास्तविक कीमत सामने आ रही है।

प्राकृतिक खेती एक अलग गणित प्रस्तुत करती है। इसमें बाहरी आदानों पर खर्च कम होता है, मिट्टी का स्वास्थ्य बेहतर होता है और कृषि उत्पादन अधिक टिकाऊ बनता है। साथ ही, ऐसी फसलें केवल उपज नहीं होतीं, बल्कि अपने साथ टिकाऊ उत्पादन, पर्यावरण संरक्षण और किसान सशक्तिकरण की एक कहानी भी लेकर आती हैं एक ऐसी कहानी जिसके लिए आज के जागरूक उपभोक्ता और बाज़ार अधिक मूल्य चुकाने के लिए तैयार हैं।

प्राकृतिक खेती केवल खेती की एक पद्धति नहीं, बल्कि कृषि को आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से अधिक सशक्त बनाने का एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण है।

भरतखंड इस बदलाव को केवल एक कृषि दर्शन के रूप में नहीं, बल्कि किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण बाज़ार अवसर के रूप में देखता है। अपने प्रत्यक्ष उपभोक्ता मंच भरतखंड फूड्स तथा रणनीतिक आपूर्ति श्रंखला साझेदारियों के माध्यम से कंसोर्टियम प्राकृतिक रूप से उत्पादित कृषि उपज के लिए सशक्त बाज़ार संपर्क विकसित करने की दिशा में सक्रिय रूप से कार्य करेगा।

इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि टिकाऊ और प्राकृतिक खेती केवल पर्यावरण एवं समाज के लिए सही विकल्प न रहे, बल्कि किसानों के लिए आर्थिक रूप से भी लाभकारी सिद्ध हो। जब किसानों को बेहतर बाज़ार, उचित मूल्य और जागरूक उपभोक्ताओं तक सीधी पहुँच मिलेगी, तब प्राकृतिक खेती एक विकल्प नहीं, बल्कि समृद्धि का मार्ग बन जाएगी।

ऐसी खेती जो आने वाले कल को संवार दे

भारतीय कृषि का भविष्य न तो गोदामों में लिखा जाएगा और न ही बोर्डरूम की बैठकों में। यह भविष्य खेतों की मिट्टी में उन किसानों द्वारा लिखा जाएगा, जिन्होंने खेती का एक नया और टिकाऊ रास्ता चुना है, और उन संस्थाओं द्वारा, जिन्होंने उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने का निर्णय लिया है।

मध्य प्रदेश के बारह जिलों में इस नई कहानी की शुरुआत हो चुकी है।

और इस परिवर्तन की कहानी को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाना भरतखंड के लिए गर्व और सम्मान की बात है।

भरतखंड फूड्स - सीधे खेतों से

पुनर्योजी खेतों से आपकी रसोई तक – भरतखंड की अनूठी पहल

हमारा हमेशा से यह विश्वास रहा है कि आपके भोजन में क्या शामिल है, यह जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण यह भी है कि वह कैसे तैयार किया गया है। यही विश्वास हमारे हर प्रयास की आधारशिला है उन खेतों की मिट्टी से, जिनकी देखभाल हमारे किसान करते हैं, लेकर उस पारंपरिक चक्की तक, जो आपके मसालों को पीसती है।

हमारे उत्पाद

- आटा उत्पाद
- दालें
- मसाले
- तेल
- अचार

हमारी प्रसंस्करण प्रक्रिया

दालों की पारंपरिक चक्की पिसाई

हमारी दालों का प्रसंस्करण हमारे समर्पित प्रसंस्करण केंद्र में पारंपरिक पत्थर की चक्कियों पर किया जाता है। धीमी गति और न्यूनतम घर्षण वाली यह प्रक्रिया दालों की प्राकृतिक बनावट, स्वाद और पोषक तत्वों को सुरक्षित रखने में सहायक होती है, जिन्हें अक्सर उच्च गति वाली आधुनिक मिलों में प्रसंस्करण के दौरान नुकसान पहुँचता है।

पत्थर की चक्की में पिसे मसाल

हमारे प्रत्येक मसाले को पारंपरिक पत्थर की चक्की में पीसा जाता है। कम तापमान और न्यूनतम घर्षण वाली यह पिसाई प्रक्रिया मसालों में मौजूद प्राकृतिक सुगंधित तेलों को सुरक्षित रखने में मदद करती है। यही कारण है कि हमारे मसालों में ताज़ी पिसाई की वही प्राकृतिक खुशबू और स्वाद मिलता है, मानो वे अभी-अभी चक्की से निकलकर आए हों, न कि किसी औद्योगिक उत्पादन से।

हम पारंपरिक प्रसंस्करण तकनीकों को आधुनिक पोषण विज्ञान की समझ के साथ जोड़ते हैं। इसका परिणाम ऐसे उत्पादों के रूप में सामने आता है, जिनमें केवल सामग्री की गुणवत्ता ही नहीं, बल्कि उन्हें तैयार करने की प्रक्रिया भी उतनी ही सोच-समझकर और सावधानीपूर्वक निर्धारित की जाती है।

भरतखंड की प्रसंस्करण कार्यपद्धति

विशेष उत्पाद

मल्टीग्रेन आटा: सिर्फ़ एक मिश्रण नहीं

हमारा मल्टीग्रेन आटा एक सरल लेकिन महत्वपूर्ण सिद्धांत पर आधारित है मिश्रण में शामिल प्रत्येक अनाज अपनी विशिष्ट भूमिका निभाता है। हम विभिन्न प्रकार के आटों का संतुलित संयोजन करते हैं, जिनमें कुछ अंकुरित अनाजों से तैयार किए जाते हैं और कुछ विशेष प्रसंस्करण तकनीकों से गुज़रते हैं, ताकि प्रत्येक सामग्री अपने विशिष्ट पोषण लाभ प्रदान कर सके।

परिणामस्वरूप तैयार होने वाला यह आटा केवल विभिन्न अनाजों का मिश्रण नहीं है, बल्कि ऐसा पोषण-संतुलित उत्पाद है जिसे इस सोच के साथ विकसित किया गया है कि हमारा शरीर भोजन का उपयोग कैसे करता है। इसका उद्देश्य केवल लेबल पर अनेक अनाजों की सूची दिखाना नहीं, बल्कि प्रत्येक रोटी के साथ बेहतर पोषण, संतुलित ऊर्जा और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना है।

इंटर्नशिप कार्यक्रम 2025

भविष्य के नेतृत्व का निर्माण

सॉलिडरीडाड के सहयोग से संचालित भरतखंड फूड्स को इस सत्र में दो परिवर्तनकारी इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए गर्व है एक स्कूली विद्यार्थियों के लिए तथा दूसरा कृषि स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए।
इन कार्यक्रमों का उद्देश्य युवाओं को कृषि, खाद्य प्रणालियों, उद्यमिता और ग्रामीण विकास की वास्तविकताओं से परिचित कराना है, ताकि वे केवल कक्षा में ही नहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर सीखते हुए भविष्य के नेतृत्वकर्ता बन सकें।

कक्षा **9** से **12** के विद्यार्थियों के
लिए ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप

प्रतिभागी : कक्षा 9 से 12 के छात्र
अवधि: 15 दिन, 3-4 घंटे/दिन, हाइब्रिड
फ़ीस: रू. 2,500 प्रति छात्र + सर्टिफ़िकेट और हेल्थ हैम्पर

बैच की जानकारी

हर स्कूल से कम से कम 3-5 और ज़्यादा से ज़्यादा 15-20 छात्र। ग्रुप बनते ही रोलिंग एडमिशन वाला बैच शुरू हो जाता है। माता-पिता की सहमति वाला फ़ॉर्म ज़रूरी है।

इंटर्नशिप के दौरान सीखने के प्रमुख विषय

- पर्यावरण एवं स्वास्थ्य साक्षरता
- भारतीय किसानों के लिए सहयोग
- डिजिटल बिक्री एवं समुदाय निर्माण
- गूगल शीट्स के माध्यम से डेटा प्रबंधन

कार्यक्रम के चरण

दिन 1–3: भोपाल में प्रत्यक्ष कार्यशालाएँ (पुनर्योजी कृषि, खाद्य सुरक्षा एवं डिजिटल विपणन)
दिन 4–5: नीको रूज़ेन इंटरनेशनल सेंटर फॉर रीजेनरेटिव एग्रीकल्चर का शैक्षणिक भ्रमण
दिन 6–13: घर से कार्य – ब्रांड कंटेंट निर्माण, उपभोक्ता जागरूकता गतिविधियाँ एवं प्रगति की निगरानी
दिन 14–15: डेटा समीक्षा, प्रस्तुतीकरण, प्रमाणपत्र वितरण एवं स्वास्थ्य उपहार (हैम्पर) वितरण

पुनर्योजी कृषि एवं खाद्य प्रणालियाँ

प्रतिभागिता : UG/PG एग्रीकल्चर स्टूडेंट्स (दूसरे साल से आगे)
अवधि: 15 दिन, 4-6 घंटे/दिन, भोपाल
फीस: 3,500 रुपये प्रति स्टूडेंट, बैच: 4-25 स्टूडेंट्स

कृषि स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों हेतु इंटर्नशिप

योग्य पाठ्यक्रम :

- **बी.एससी. कृषि / एम.एससी. कृषि**
- **बी.टेक. कृषि एवं एग्री-बिज़नेस मैनेजमेंट**
- **उद्यानिकी, वानिकी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी**
- **कृषि अभियांत्रिकी एवं संबद्ध विज्ञान**

सीखने के प्रमुख विषय

- पुनर्योजी कृषि एवं मृदा स्वास्थ्य
- खाद्य प्रसंस्करण एवं गुणवत्ता प्रबंधन
- डिजिटल कृषि एवं डेटा प्रबंधन
- किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ)
- कृषि मूल्य श्रंखलाएं एवं कृषि व्यवसाय

कार्यक्रम के प्रमुख चरण

- दिन 1–5: भोपाल में ओरिएंटेशन – भरतखंड इकोसिस्टम, एफपीओ मॉडल्स एवं कृषि मूल्य श्रंखला की समझ
- दिन 6–7: फील्ड इमर्शन – खेतों का भ्रमण, मृदा परीक्षण एवं किसानों के साथ प्रत्यक्ष संवाद
- दिन 8–13: व्यावहारिक परियोजनाएँ – एफपीओ विश्लेषण, उपभोक्ता शोध एवं कृषि-व्यवसाय रणनीति विकास
- दिन 14–15: प्रस्तुतियाँ, उद्योग विशेषज्ञों के साथ संवाद, मूल्यांकन एवं प्रमाणपत्र वितरण

प्रमाणन: इंटर्नशिप पूर्णता प्रमाणपत्र, उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को सम्मान/प्रशस्ति पत्र, तथा विस्तारित इंटर्नशिप और शोध सहयोग का अवसर।

महिला नेतृत्व से सशक्त हुआ कचनारिया एफपीओ

रेखा चौहान और कचनारिया फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की कहानी
कचनारिया गांव, आगर-मालवा जिला, मध्य प्रदेश

कचनारिया किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड किसी बोर्डरूम में नहीं बनी। यह उस गाँव की बैठकों में आकार लेती है, जहाँ महिलाएँ एक साथ बैठकर अपनी व्यक्तिगत चुनौतियों से आगे एक बड़े भविष्य की कल्पना करती थीं। इसी सामूहिक प्रयास के केंद्र में हैं रेखा चौहान एक किसान, संस्थापक सदस्य, और कचनारिया एफपीओ को उसकी वर्तमान पहचान देने वाली प्रमुख प्रेरक शक्ति।

उनकी कहानी, एफपीओ की कहानी से अलग नहीं है। दोनों एक-दूसरे के साथ बढ़े, और एक-दूसरे को मजबूत करते गए। विचार जिसने शुरुआत की भोपाल में सॉलिडरीडाड नेटवर्क द्वारा आयोजित बैठकों और कार्यक्रमों में भागीदारी ने रेखा चौहान को एक व्यापक दृष्टिकोण दिया। उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से देखा कि जब महिलाएँ एकजुट होकर काम करती हैं तो वे कितना बड़ा परिवर्तन ला सकती हैं।

“मैंने सॉलिडरीडाड द्वारा आयोजित भोपाल की बैठकों में भाग लिया। मैंने देखा कि महिलाएँ मिलकर क्या हासिल कर सकती हैं। उसी अनुभव ने मुझे हमारे अपने एफपीओ की शुरुआत के लिए प्रेरित किया।”
— रेखा चौहान, संस्थापक सदस्य

यही दृष्टि आगे चलकर कचनारिया किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड के रूप में साकार हुई। रेखा चौहान ने दस अन्य महिला किसानों के साथ मिलकर इस एफपीओ की औपचारिक स्थापना की एक ऐसी संरचना तैयार की जहाँ सामूहिक प्रयास वह हासिल कर सके जो व्यक्तिगत स्तर पर संभव नहीं था।

सामूहिक शक्ति, वास्तविक प्रतिफल

एफपीओ का पहला सामूहिक उद्यम बकरी पालन था। संसाधनों को एकजुट कर और जिम्मेदारियों को साझा करते हुए, ग्यारह संस्थापक सदस्यों ने मिलकर इस उद्यम की शुरुआत और संचालन किया। मात्र नौ महीनों में इस समूह ने बकरी बिक्री से Rs. 50,000 की आय अर्जित की एक ऐसा परिणाम जो किसी भी सदस्य के अकेले काम करने पर संभव नहीं था।

यही इस एफपीओ का मूल वादा है-अकेले नहीं, साथ मिलकर बदलाव संभव है।

आज़ादी, हर सदस्य के साथ

रेखा चौहान के लिए एफपीओ की सदस्यता केवल आय का साधन नहीं रही यह आत्मनिर्भरता का माध्यम बनी है। आज वे अपनी आय को स्पष्ट उद्देश्य के साथ प्रबंधित करती हैं, जिसमें घरेलू आवश्यकताओं, व्यक्तिगत खर्च और भविष्य की बचत के लिए सुव्यवस्थित रूप से धन अलग रखा जाता है।

ग्रामीण महिला किसान के लिए एक व्यक्तिगत बैंक खाता केवल वित्तीय सुरक्षा नहीं है यह सम्मान और गरिमा का प्रतीक है।

FPO के सामूहिक मॉडल ने उनके अपने परिवार में भी नए मौके पैदा किए हैं। अब उनका बेटा उन महिला सदस्यों की मदद करता है जो मंडी तक नहीं पहुँच पातीं; वह उनकी उपज को इकट्ठा करके और बेचकर FPO की सदस्यता पर आधारित गाँव-स्तर की एक छोटी लेकिन अहम सप्लाई चेन बनाता है।

बहुगुणित होता नेतृत्व

रेखा चौहान आज कचनारिया एफपीओ की सबसे प्रमुख स्थानीय नेतृत्वकर्ता बन चुकी हैं। आज गाँव की लगभग 30 महिलाएँ उनसे मार्गदर्शन लेती हैं और समुदाय के भीतर उनके द्वारा साझा की गई कृषि एवं संगठनात्मक पद्धतियों को अपनाती हैं।

हर नई महिला सदस्य का जुड़ना एफपीओ की सामूहिक आवाज़ को और अधिक मजबूत करता है, उसकी बाज़ार में उपस्थिति को विस्तार देता है और उसे एक सशक्त एवं संगठित उद्यम के रूप में स्थापित करता है।

यही एफपीओ मॉडल की वास्तविक शक्ति है यह केवल एक व्यक्ति को ऊपर नहीं उठाता, बल्कि ऐसे नेतृत्व को जन्म देता है जो दूसरों को भी आगे बढ़ने के लिए सक्षम बनाता है।

कचनारिया एफपीओ क्या दर्शाता है

रेखा चौहान की यात्रा ही कचनारिया एफपीओ के उद्देश्य का जीवंत उदाहरण है एक ऐसी महिला की कहानी, जिसने अकेले खेती करने से आगे बढ़कर एक सामूहिक संगठन की स्थापना की; अनिश्चितता से नेतृत्व की ओर कदम बढ़ाया; और व्यक्तिगत प्रयासों से आगे बढ़कर साझा उद्यम का निर्माण किया।

जब एक महिला आगे बढ़ती है, तो पूरा गाँव आगे बढ़ता है। जब सदस्य एक साथ प्रगति करते हैं, तो एफपीओ भी सशक्त होता है और उसके साथ वह भविष्य भी, जिसे वह आकार देने के लिए बनाया गया है।

“पहले मैं अपने खेत में काम करती थी। अब मैं अपने खेत और अपने गाँव दोनों का नेतृत्व करती हूँ।”

रेखा चौहान, कचनारिया किसान उत्पादक कंपनी

हमारे एफपीओ के बारे में जानें

रेतम किसान उत्पादक कंपनी
मल्हारगढ़, मंदसौर जिला, मध्य प्रदेश

मालवा पठार पर शुरू हुई 'रेतम FPO' 608 छोटे किसानों को एक साथ लाकर उनकी सामूहिक आवाज़ बनती है, यह अश्वगंधा की जड़ों को ग्रामीण आजीविका का ज़रिया और कम उपजाऊ ज़मीन को बाज़ार के मौक़े में बदलती है।

फसलें एवं कृषि उपज

मान्यता प्राप्त / सहयोग प्राप्त:
क्यूसीआई प्रमाणित, एसएफएसी समर्थित, 10,000 एफपीओ योजना, पुनर्योजी कृषि

नेतृत्व

- **सीईओ: राहुल राठौर (बी.एससी. कृषि)**
- **अध्यक्ष: ज्ञान प्रकाश**
- **निदेशक मंडल: 6 सदस्य**
- **बोर्ड में महिला प्रतिनिधित्व: हाँ**
- **प्रवर्तक संस्था: सॉलिडेरिडाड (CBBO)**

रेतम सेवाएँ

Soil testing & crop advisory
Input supply facilitation
Grading, sorting & processing
Market linkages: ITC, AWL
Govt. scheme & credit access

Our Partners

Contacts

Bharatkhand Hub Zonal Offices

Bhopal	Bharatkhand Consortium of Farmers Producer Company Limited. D/67, BDA Colony, Kohefiza, Bhopal, Madhya Pradesh - 462001	Mr. Himanshu Bains +91 9009923816 Ms. Anvesha Singh +91 9406779242
Sehore	H.N- 619, Near Nalanda School, Chanakyapuri Sehore Madhya Pradesh 466001	Ms. Namrita Bhanweriya +91 9644195248
Mandsour	HIG-17, Gandhi Nagar, Mandsaur Madhya Pradesh- 458001	Mr. Arvind Patidar +91 7566652686
Dewas	Bharatkhand Hub 48, Ram Nagar, Dewas Madhya Pradesh- 455001	Ms. Purva Wadwekar +91 9171251979
Tarana	H.No. 30 Krishna Kunj Vihar Colony Rupakhedi Road Tarana, Ujjain, Madhya Pradesh- 456665	Mr. Sandeep Mishra +91 9450707018